याहवेह: ''प्रभु''

परमेश्वर का एकमात्र वास्तविक नाम याहवेह है। यह वही नाम है जो इस्राएलियों को मिसर की दासता से निकालने के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने के समय सीनै पर्वत पर मूसा पर प्रकट किया गया था। प्रभु ने मूसा को बताया था, ''... देख, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा'' (निर्गमन 3:15)।

''याहवेह'' चार इब्रानी अक्षरों ''YHWH'' का अनुवाद करने का एक प्रयास है। अंग्रेज़ी की बाइबलों में इस शब्द का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार से किया जाता है। किंग जेम्स वर्ज़न, रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न और न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (अपडेटेड एडिशन) में ''LORD'' (सभी बड़े अक्षरों में), जबकि अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल में ''Jehovah'' का इस्तेमाल किया गया है। बाइबल के अधिकतर विद्वानों का विचार है कि ''याहवेह'' सही अनुवाद है। हमारी हिन्दी की बाइबल में इसका अनुवाद यहोवा ही किया गया है। परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम का यह प्रतिरूप (निर्गमन 3:15) पुराने नियम में 6,823 बार मिलता है जो कि किसी भी ईश्वरीय पदनाम से अधिक है। ''याहवेह'' के साथ मिलाकर कई दूसरे शब्दों से इसका अर्थ और गहरा हो जाता है।

याहवेह एलोहीम: ''प्रभु परमेश्वर''

बाइबल में ''याहवेह'' का पहली बार इस्तेमाल

परमेश्वर की व्याख्या के लिए ''याहवेह'' शब्द पहली बार *एलोहीम* शब्द के साथ मिलता है, जिसकी हमने पिछले पाठ में खोज की थी। उत्पत्ति 2:4 में हम पढ़ते हैं, ''आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तांत यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात जिस दिन यहोवा परमेश्वर [*याहवेह एलोहीम*] ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।''

''परमेश्वर'' शब्द का इस्तेमाल मूसा ने उत्पत्ति 1:1–2:3 में चौंतीस बार किया था। फिर उसने ''याहवेह'' शब्द का परिचय देकर ''परमेश्वर'' शब्द के साथ उत्पत्ति 2:4–3:24 में इसका इस्तेमाल उन्नीस बार किया। कई लोगों का अनुमान है कि ''परमेश्वर'' कहते-कहते ''यहोवा परमेश्वर'' कहने में अचानक और पूरी तरह आया यह बदलाव संकेत देता है कि इसके दो लेखक हैं। इस प्रकार का तर्क उत्पत्ति की पुस्तक की एकता और अखण्डता को ठेस पहुंचाता है और यीशु द्वारा मूसा को पंचग्रन्थ (पांच पुस्तकों) का लेखक कहने की बात के प्रति अपमान दिखाता है (यूहन्ना 5:46, 47)। अधिक सम्मान देने वाली मान्यता यह है कि जिस प्रकार से बाइबल में परमेश्वर के नाम दिए गए हैं वे सभी परमेश्वर की पूर्व

योजना के अनुसार ही हैं।

इसके पीछे ईश्वरीय उद्देश्य क्या है, उसे स्पष्ट नहीं किया गया, परन्तु परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम ''याहवेह'' का पहली बार इस्तेमाल परमेश्वर और मनुष्य अर्थात याहवेह और आदम के बहुत ही निजी सम्बन्धों के संदर्भ में किया गया है। उत्पत्ति 2 में आदम के नथनों में याहवेह का श्वास फूंकना, एक वाटिका बनाना, वाटिका में घूमना, हव्वा को बनाना और आदम और हव्वा के साथ आमने-सामने वार्तालाप की बात बताता है। यह तर्कपूर्ण लगता है कि बड़ी ही सावधानी से लिखी गई बाइबल में परमेश्वर के बारे में बताने के लिए बिल्कुल सही जगह पर सही शब्दों का इस्तेमाल होना चाहिए था।

''याहवेह'' के अर्थ का प्रकाशन

किसी कारण आदम के समय से सैकड़ों वर्षों बाद तक परमेश्वर ''याहवेह'' नाम को पूरी तरह से प्रकट करने की प्रतीक्षा करता रहा। पुरातनकाल के लोगों में इसका इस्तेमाल बार-बार होता तो था,[1] परन्तु होरेब पर्वत पर आग की झाड़ी में मूसा से बात करने तक प्रभु ने पूर्ण रूप से इस नाम का अर्थ प्रकट नहीं किया था। जब मूसा को अरब से निकलकर इस्राएलियों को मिसर से निकालने का आदेश दिया गया, तो उसने प्रभु से कहा था कि इस्राएली पूछेंगे कि परमेश्वर का नाम क्या है। फिर परमेश्वर ने न केवल ''याहवेह'' (निर्गमन 3:15) नाम को स्पष्ट किया बल्कि उसे इसका अर्थ ''अपने आप ही अस्तित्व में होने वाला'' अर्थात ''मैं जो हूं सो हूं'' (निर्गमन 3:14), या ''मैं हूं क्योंकि मैं हूं'' बताया।

पुरखाओं को भी जो परमेश्वर के बहुत निकट थे, परमेश्वर के नाम की ऐसी स्पष्ट परिभाषा नहीं दी गई थी। वे *एल शद्दै* अर्थात ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर'' वाक्यांश से काफी परिचित थे; परन्तु परमेश्वर ने कहा कि ''यहोवा [याहवेह] के नाम [के अर्थ] से मैं उन पर प्रगट न हुआ'' (निर्गमन 6:3)। परन्तु, यहां पर मूसा की बिनती को मानकर और इस्राएलियों में विश्वास दिलाने के लिए, परमेश्वर ने अपने नाम के अर्थ को पहली बार पूरी तरह से प्रकट किया।

बेशक मूसा और इस्राएलियों को ''याहवेह'' नाम की स्पष्ट परिभाषा दी गई थी, फिर भी इसका सम्बन्ध परमेश्वर की गहरी बातों से था और आज भी है। कोई भी मनुष्य उसके स्वभाव को नहीं पा सकता जिसका कोई पैदा करने वाला नहीं है। कोई भी मनुष्य इसकी व्याख्या नहीं कर सकता कि वह जिसका कोई आदि नहीं है, कैसे अस्तित्व में आया और अस्तित्व में कैसे बना रहता है। दूसरी सब बातों का निश्चय ही कोई उद्देश्य है और अन्त में उन सबका कारण परमेश्वर ही है; परमेश्वर के लिए ऐसा कोई कारण नहीं था। वह एक ऐसा कारण है जिसका कोई कारण नहीं है।

जब कोई बच्चा अपने पिता से पूछता है कि परमेश्वर कैसे अस्तित्व में आया, तो वह अपने पिता से एक ऐसा प्रश्न पूछ रहा होता है जिसका उत्तर उसका पिता नहीं दे सकता। जब उसका पिता यह उत्तर देता है, ''बस इसलिए क्योंकि वह परमेश्वर है,'' तो वह जितना पीछे जा सकता था चला गया अर्थात उतना ही पीछे जितना मूसा के साथ परमेश्वर गया था।

एक व्याख्या यह हो सकती है कि "मैं अस्तित्व में इसलिए हूं क्योंकि मेरा अस्तित्व है; मेरा अस्तित्व इसलिए है क्योंकि मैं जो हूं सो हूं।" परमेश्वर का स्वभाव ही है कि वह अपने आप से अपना अस्तित्व रखता है। इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती; परन्तु इसे विश्वास से स्वीकार किया जा सकता है। जो कोई परमेश्वर के पास आता है उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है (इब्रानियों 11:6), परन्तु उसे यह पता नहीं चल सकता कि वह क्यों और कैसे अस्तित्व में है।

इस्राएलियों को यह पता नहीं चल सकता था कि परमेश्वर अस्तित्व में कैसे आया, परन्तु उन्होंने मूसा की बात सुनी, उसके आश्चर्यकर्म देखे और विश्वास किया कि परमेश्वर है क्योंकि वह है। फिर उन्होंने झुककर उसे दण्डवत किया (निर्गमन 4:31)। उसी प्रकार, हम यह तो नहीं जान सकते कि परमेश्वर कहां से आया; परन्तु जीवन के अनुग्रह की प्रशन्सा करके हम उसे स्वीकार करेंगे, उसका धन्यवाद करेंगे, उसकी आराधना और सेवा करेंगे जिसमें हम चलते-फिरते और जीवित रहते हैं और जिससे सभी आशिषें मिलती हैं।

यीशु याहवेह है

यह विचार बहुत ही रोमांचक है कि यीशु नासरी एक मानवीय जीव से बढ़कर था। शारीरिक रूप से यहूदियों में से आने वाला यह मनुष्य नाशवान ही था, परन्तु बैतलहम में अपने आगमन से पूर्व वह किसी भी अन्य मनुष्य के विपरीत पहले ही अस्तित्व में था। बेतलहम में उसके जन्म से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व हुए अब्राम से पहले, यीशु *लोगोस* अर्थात उस वचन के रूप में अस्तित्व में था, जो परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1-3)। यरूशलेम में यहूदियों के साथ बात करते हुए वह अपने बारे में उसी भाषा का इस्तेमाल कर सकता था जिसका इस्तेमाल मूसा के साथ अपने परिचय में परमेश्वर ने किया था अर्थात यह कि "मैं हूं" (यूहन्ना 8:58)।

इब्राहीम से बहुत पहले, यीशु के विषय में कहा गया था कि उसका "निकलना प्राचीनकाल से, वरन आदि काल से होता आया है" (मीका 5:2)। इसलिए, बाइबल की यह शिक्षा समझ आने योग्य है कि याहवेह (यशायाह 40:3) इस संसार में आएगा। देखो, यह यीशु ही था! (देखिए मत्ती 3:3)। फिर तो यीशु मसीह अपने पिता के स्वभाव जैसा ही है। वह कोई छोटा परमेश्वर अर्थात छोटा याहवेह नहीं है, उसका अस्तित्व अपने आप से है। धन्य हैं वे लोग जो उस पर भरोसा रखते हैं और याहवेह जिनकी आशा है! (देखिए भजन संहिता 146:5.)

अदोनाय याहवेह: "प्रभु परमेश्वर"

परमेश्वर को "प्रभु" या "स्वामी" के रूप में पहली बार उत्पत्ति 15:2 में ही दिखाया गया है। इब्राहीम ने परमेश्वर को *अदोनाय याहवेह* कहकर संबोधित किया था, जिसका अर्थ है "प्रभु परमेश्वर।"

इस बात पर पहले ही ध्यान आकर्षित किया जा चुका है कि बहुवचन रूप *एलोहीम*

का इस्तेमाल ईश्वरों की बहुतायत के लिए नहीं बल्कि सम्मान तथा अधिकार को दर्शाने के लिए किया गया है। इसी प्रकार, उत्पत्ति 15 में इब्राहीम ने ''प्रभु'' शब्द के बहुवचन रूप का इस्तेमाल सबके प्रभु तथा स्वामी की महिमा ''प्रताप'' और उसे मिलने वाले सम्मान को दर्शाने के लिए किया। इब्रानी भाषा में इब्राहीम द्वारा सम्बन्धवाचक सर्वनाम ''मेरा'' संकेत देता है कि वह याहवेह को अपना प्रभु और स्वामी मानकर पूर्ण रूप से उसके सामने अपने आपको सौंपने का अंगीकार कर रहा था।

इस संदर्भ में, परमेश्वर द्वारा यह प्रतिज्ञा करने के साथ कि वह अब्राम को अंश देगा, अब्राम को यह अहसास होने लगा कि प्रभु याहवेह के पास पूर्ण अधिकार है। अब्राम ने पूछा कि परमेश्वर 85 वर्ष के एक नि:संतान बूढ़े और 75 वर्ष की उसकी बांझ पत्नी को कैसे संतान देगा। अब्राम के जीवन तथा बाइबल के इतिहास की यह अति महत्वपूर्ण बात है कि अंधेरे में चलते हुए अब्राम को परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने का विश्वास था कि वह अब्राम और उसके वंशजों को, वैसे ही बढ़ाएगा जैसे आकाश के तारे हैं।

प्रभु याहवेह जिस पर अब्राम ने इतना विश्वास किया था वही प्रभु याहवेह है जिसमें अब्राम के सभी आत्मिक वंशज आज भी विश्वास करते हैं। यह वही है ''जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था। वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया'' (रोमियों 4:24, 25)।

याहवेह यिरेह: ''प्रभु जो उपाय करेगा''

बाद में, उत्पत्ति 22:14 में इब्राहीम ने परमेश्वर के लिए एक और नाम *याहवेह यिरेह* अर्थात ''यहोवाह उपाय करेगा'' का इस्तेमाल किया। इब्राहीम ने भरोसा किया कि उसकी जो भी आवश्यकता है, परमेश्वर उसे पूरा करेगा।

विश्वास के इस पुरुष, इब्राहीम ने इसहाक को बताया कि परमेश्वर होम बलि के मेम्ने का उपाय अर्थात प्रबन्ध करेगा (उत्पत्ति 22:8)। उस समय तक, इब्राहीम सोचता था कि मेम्ना इसहाक ही होगा। उसे यह पता नहीं था कि परमेश्वर एक मेम्ने को भेजकर इसहाक को छोड़ देगा। परमेश्वर द्वारा उपलब्ध करवाए गए मेम्ने को देखकर, परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध का अनुभव करके जो खुशी इब्राहीम को हुई होगी, उसका वर्णन करना कठिन है। फिर तो यह तथ्य समझ आ सकता है कि इब्राहीम ने पहाड़ पर उस यादगारी जगह का नाम *याहवेह यिरेह* अर्थात ''यहोवा उपाय करेगा'' क्यों रखा। सैकड़ों वर्ष बाद, इब्राहीम के वंशज अपने इस महान पूर्वज को दिखाए परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध से आनन्दित हुए। स्पष्टत:, उन्होंने एक लोकोक्ति बना ली: ''याहवेह के पहाड़ में उपाय हो जाएगा।'' इब्राहीम के जीवन की इस यादगार घटना ने न केवल परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध में इब्राहीम के विश्वास को ही बढ़ाया बल्कि इससे दूसरे बहुत से लोगों का भरोसा आज तक दृढ़ होता आ रहा है।

साधारण पूर्व प्रबन्ध

सब जीवों को आकाश से वर्षा देकर भोजन तथा आनन्द से तृप्त करने के प्रभु के

पूर्वप्रबन्ध को सब जानते हैं (प्रेरितों 14:17)। पक्षियों को भोजन तथा जंगली सोसनों (फूलों) को सुन्दर रूप परमेश्वर ही उपलब्ध कराता है (मत्ती 6:25-32)। कृतघ्न तथा दुष्ट लोगों पर दया करने वाला (लूका 6:35) परमेश्वर मसीही और गैर मसीही दोनों प्रकार के लोगों पर अपना सूरज चमकाता है। वह पापी के खेत में भी वैसे ही बारिश करता है जैसे कि एक मसीही के खेत में (मत्ती 5:45)। इस साधारण पूर्वप्रबन्ध में, वह सब मनुष्यों का बचाने वाला है (1 तीमुथियुस 4:10)।

विशेष पूर्वप्रबन्ध

याहवेह यिरेह सब मनुष्यों का नहीं, परन्तु "निज करके विश्वासियों का" उद्धारकर्त्ता है (1 तीमुथियुस 4:10)। धर्म के प्रति समर्पित लोगों की आवश्यकताओं को परमेश्वर पहले से ही देख लेता है और उनके लिए विशेष प्रकार से उपाय भी करता है।

बाइबल में परमेश्वर को हमारे पिता के रूप में दिखाया गया है, इसलिए उसके विशेष पूर्वप्रबन्ध को समझना चाहिए। कोई भी अच्छा पिता अपने बच्चों के लिए केवल साधारण रूप से ही उपाय नहीं करता जैसे बैंक में पैसे जमा करवाकर अलोप हो जाना। शारीरिक पिता उतने अच्छे नहीं हैं जितना कि स्वर्गीय पिता, परन्तु फिर भी उन्हें अपने प्रत्येक बच्चे पर निजी तौर पर ध्यान देकर आनन्द मिलता है।

कई बार समृद्धि दी जाती है। कई बार मसीही लोगों के लिए विशेष पूर्वप्रबन्ध का अर्थ बड़ी राशि के चैक देना होता है। प्रभु सीधे मार्ग पर चलने वालों को किसी अच्छी वस्तु से वंचित नहीं करता है (भजन संहिता 84:11)। यदि मसीही लोग समृद्धि को परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करके धर्म से स्वीकार कर सकें, तो *याहवेह यिरहे* उन पर पूरा अनुग्रह कर सकता है (2 कुरिन्थियों 9:8)। "जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है ... बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा" (2 कुरिन्थियों 9:10)।

कई बार निर्धनता दी जाती है। परमेश्वर के विशेष पूर्वप्रबन्ध का अर्थ निर्धनता भी हो सकता है। वह जिसे सब लोगों की आवश्यकताओं का पता है, कभी-कभी अपनी बुद्धि तथा प्रेम से अपने लोगों को ऐसी वस्तुओं से वंचित कर देता है जो उनके हित में नहीं होतीं। दाऊद ने कभी किसी धर्मी को भीख मांगते नहीं देखा था (भजन संहिता 37:25, 26), परन्तु यीशु ने देखा (लूका 16:19-31)। कई बार लोगों की सबसे बड़ी आवश्यकता उपदेश की होती है (इब्रानियों 12:2-6, 11)। धन्य हैं वे जो उपदेश को सबसे प्रेम करने वाले पिता की ओर से मिली सहायता के रूप में स्वीकार करते हैं। एक बालक के रूप में जिसे अपने पिता की सम्भाल पर कुछ अधिक ही भरोसा था, पौलुस ने परमेश्वर द्वारा दी गई हर बात को अपने भले के लिए प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया:

> और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो,

> वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ (फिलिप्पियों 4:11, 12)।

पौलुस जैसा शक्तिशाली और प्रचार करने की प्रबल इच्छा रखने वाला व्यक्ति दो वर्षों तक बेड़ियों में कैसे बन्धा रहा होगा। फिर भी, जिसने यह लिखा कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, सब बातें मिलकर उनका भला ही करती हैं (रोमियों 8:28) वो अपने बन्दी होने से निकलने वाली भलाई को देखने के लिए जीवित रहा।

> हे भाइयो, मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि तुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं। और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं (फिलिप्पियों 1:12–14)।

किसी के जीवन साथी को भयंकर रोग हो या परिवार पर कोई दुखद घड़ी आ पहुंचे, तो यह भरोसा करने के लिए बड़े विश्वास की आवश्यकता होती है कि इसमें भी कुछ भलाई ही होगी। उन सारी कठिनाइयों के बावजूद जो उसने सहीं, पौलुस ने विश्वास किया कि परमेश्वर किसी भी परिस्थिति से भलाई उत्पन्न कर सकता है। बाद में वह अपने ही जीवन में इस बात को चरितार्थ होते देख पाया था। हो सकता है कि दूसरे कई लोग अपने जीवन में इन बातों को होता न देख पाएं, परन्तु हो सकता है कि वे अपने इस विश्वास में मर जाएं कि जो लोग यीशु से सचमुच प्रेम रखते हैं सब वस्तुएं मिलकर उनका भला ही करती हैं।

कई बार परीक्षाएं टल जाती हैं। मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध में शैतान को उनसे दूर रखना भी शामिल है। हमारा ध्यान रखने वाला परमेश्वर जो प्रत्येक व्यक्ति पर विशेष ध्यान दे सकता है, भरोसे के योग्य है: वह किसी भी मसीही को उसके सहने की क्षमता से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, और वह इस बात का भी ध्यान रखता है कि उस परीक्षा में से निकलने के लिए उसके लिए मार्ग खुला हो (1 कुरिन्थियों 10:13)। वह किसी मसीही को उस परीक्षा का सामना करने या उससे बचने के लिए बाध्य नहीं करता; इस बात का निर्णय प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर छोड़ दिया जाता है (याकूब 4:7); परन्तु वह इस बात का ध्यान रखता है कि उस परीक्षा का सामना करने और उससे निकलने का मार्ग बना रहे। हम इसे custom-made पूर्वप्रबन्ध कह सकते हैं अर्थात प्रत्येक परीक्षा किसी मनुष्य की व्यक्तिगत सामर्थ के अनुसार बनाई जाती है।

ज़रूरी नहीं कि विशेष पूर्वप्रबन्ध चमत्कारी ही हो

बेशक *याहवेह यिरेह* के रूप में परमेश्वर ने प्राय: चमत्कारी ढंग से हस्तक्षेप किया है, परन्तु उसका पूर्वप्रबन्ध आश्चर्यकर्मों तक सीमित नहीं है। यह देखने के लिए कि उसके

लोगों को उनकी आवश्यक वस्तुएं मिलती हैं और जिन वस्तुओं की उन्हें आवश्यकता नहीं उनसे उन्हें दूर रखना है, प्रकृति के अपने नियमों के द्वारा काम कर सकता है और करता है।

मेम्ने के झाड़ी में फंसने के लिए किसी आश्चर्यकर्म की आवश्यकता नहीं थी। जहां तक उस खोजे को पता चला था, उसके रथ के साथ-साथ फिलिप्पुस तक आने की घटना पूरी तरह से प्राकृतिक थी। पौलुस को मरने से बचाने के लिए प्रभु द्वारा उसके भानजे के इस्तेमाल में कोई आश्चर्यकर्म नहीं हुआ था। पौलुस के शरीर के कांटे के सम्बन्ध में किसी आश्चर्यकर्म की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है। वर्षा के लिए एलिय्याह की प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर के लिए कोई आश्चर्यकर्म करने की आवश्यकता नहीं है।

बुद्धि के लिए सुलैमान की प्रार्थना का उत्तर चमत्कार के रूप में दिया गया था, परन्तु आज बुद्धि प्रार्थना के द्वारा प्राकृतिक नियमों से दी जाती है (याकूब 1:5-7)। बेशक कैद से पौलुस का छूटना चमत्कारिक था परन्तु 96 ई. में सम्राट नरवा की अनुमति से डोमिशियन के देश निकाले से यूहन्ना का छूटना चमत्कारिक नहीं था। इस तथ्य से कि बाइबल के समय के आश्चर्यकर्म आज नहीं होते किसी मसीही को परमेश्वर के विशेष पूर्वप्रबन्ध के बारे में निराश नहीं होना चाहिए।

विशेष पूर्वप्रबन्ध का एक प्रमुख उदाहरण

परमेश्वर का विशेष पूर्वप्रबन्ध देने का प्रमुख उदाहरण पाप धोने वाले के रूप में यीशु को भेजना है। जिस ढंग से *याहवेह यिरेह* ने उस समय मेम्ना उपलब्ध करवाया जब इब्राहीम को उसकी बहुत आवश्यकता थी, उसी *याहवेह यिरेह* ने एक विशेष प्रकार से परमेश्वर का मेम्ना उस समय उपलब्ध करवाया जब सारी मनुष्य जाति को उसकी अत्यधिक आवश्यकता थी। जैसे इब्राहीम को उस मेम्ने का उपयुक्त लाभ उठाकर उसे इस्तेमाल करना था, वैसे ही परमेश्वर के अनकहे पूर्वप्रबन्ध के दान को पापी आत्माओं की क्षमा तथा आनन्द के लिए उसका लाभ लेना आवश्यक है।

सारी मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर का साधारण पूर्वप्रबन्ध अपनी संतान के लिए उसकी विशेष सम्भाल को समाप्त नहीं कर देता। अच्छा हो या बुरा, वह हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार देता है। आश्चर्यकर्मों के युग के बीत जाने से सर्वशक्तिमान और दयालु याहवेह यिरेह ने अपने बच्चों की आवश्यकताओं और उनकी खुशी को देखना बन्द नहीं किया है।

याहवेह निस्सी: "प्रभु मेरा सहायक है"

वह लाठी या छड़ी काफ़ी प्रसिद्ध हो गई थी जिसे यिथरो के झुण्ड को चराते हुए चरवाहा मूसा अपने पास रखता था। मूसा ने जब इसे भूमि पर फैंका था, तो परमेश्वर की सामर्थ से यह सर्प बन गई थी (निर्गमन 4:3)। भूमि पर से दोबारा उठा लेने पर यह फिर से लाठी ही बन गई थी। यह चमत्कारी शक्ति इब्रानी लोगों को यह समझाने के लिए थी कि परमेश्वर ने मूसा को सचमुच दर्शन दिया था। आश्चर्यकर्म करने से, लोगों ने विश्वास

किया, अपने सिरों को झुका दिया और दण्डवत किया।

स्पष्टतः, इसी लाठी का फिरौन को परमेश्वर के सामने झुकाने के लिए असफल चमत्कारिक इस्तेमाल किया गया था (निर्गमन 7:10)। इसी प्रकार, इसका इस्तेमाल उस हथियार के रूप में भी किया गया था जिससे परमेश्वर ने मूसा और हारून के द्वारा पानी को लोहू में बदल दिया था, मेंढकों को बढ़ाया, धूल के कणों को कुटिकियां [मरु मक्षिका या पिस्सू] बनाकर, गरज और ओले भेजे और आग पृथ्वी पर गिरती रही और टिड्डियों की महामारी आई (निर्गमन 7:15–10:13)। इसने सम्भवतः अंधेरे के उन तीन दिनों की घोषणा करने की भूमिका भी निभाई। मूसा ने जब अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ लाल समुद्र के ऊपर बढ़ाया तो समुद्र दो भागों में बंट गया। स्पष्टतः समुद्र को मिलाने के लिए फिर से वैसे ही किया गया। फिर, जंगल में प्यासे लोगों को भी तृप्त किया गया जब उस चट्टान से पानी निकल पड़ा था जिस पर मूसा ने लाठी मारी थी (गिनती 20:11)।

इस्राएलियों पर आक्रमण के समय, जब तक मूसा अपनी लाठी को उठाए रखता था तब तक परमेश्वर के लोग युद्ध जीतते रहते थे। जब मूसा का हाथ थककर भारी हो जाता और वह उसे आराम के लिए नीचे करता, तो शत्रु पक्ष प्रबल हो जाता था। परमेश्वर के लोगों को हारून और हूर की सहायता से विजय मिली थी। जब मूसा बैठ गया तो हारून और हूर उसके दोनों ओर खड़े होकर सूर्यास्त तक उसके हाथों को ऊपर उठाए खड़े रहे थे। उस विजय का जश्न मनाने के लिए जो प्रभु ने इस्राएलियों को दी थी, मूसा ने एक वेदी बनाई और उसका नाम *याहवेह निस्सी,* अर्थात ''प्रभु मेरा सहायक है'' (निर्गमन 17:15) रखा। जो लाठी दूसरे उद्देश्यों के लिए इतनी लाभदायक थी, मूसा ने अब उसे *नेस* अर्थात एक बैनर, झण्डा, एक ध्वज कहा। इस प्रकार मूसा ने घोषणा की कि इस्राएलियों ने युद्ध अपनी सामर्थ से नहीं जीता बल्कि परमेश्वर ने उन्हें विजय दिलाई थी।

पाप पर विजय भी इसी प्रकार *नेस* अर्थात बैनर के उदाहरण में रखी जाती है। भविष्यवाणी के अनुसार, एक दिन आएगा, जब ''यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिए एक झण्डा होगी; ... और उसका विश्राम स्थान तेजोमय होगा'' (यशायाह 11:10)। परमेश्वर ने मसीह को एक झण्डे के रूप में खड़ा करना था जिसके आस-पास देश-देश के लोगों और इस्राएलियों को इकट्ठा होना था (यशायाह 11:12)। एक *नेस* अर्थात वह खम्भा जिस पर जंगल में पीतल का सांप लटकाया गया था, उस क्रूस का प्रतिरूप बन गया जिस पर मसीह को लटकाया गया था (गिनती 21:8, 9; यूहन्ना 3:14)। उद्धारकर्त्ता ने क्रूस के रूप में एक नेस (*nasas* से निकला, जिसका अर्थ ''उठाना, ऊंचा करना, उभारना'' है) जिसमें उसने कहा था, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)। अमालेकियों पर विजय से कहीं बढ़कर पाप और कब्र (मृत्यु) पर यीशु की विजय है। वह, *याहवेह निस्सी* अर्थात ''प्रभु मेरा सहायक'' भी है।

याहवेह शलोम: ''प्रभु शांति है''

जब गिदोन को यह अहसास हुआ कि उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को आमने-सामने

देख लिया है (न्यायियों 6:22) तो वह यह सोचकर डर गया कि अब तो मर ही जाएगा। जब प्रभु ने यह कहते हुए ''तुझे शान्ति मिले; मत डर तू न मरेगा,'' उसकी जान बख्श दी तो आभारस्वरूप गिदोन ने एक वेदी बनाई और इसे *याहवेह शलोम* अर्थात ''प्रभु शांति है'' नाम दिया (न्यायियों 6:24)।

कि हम जो पापी हैं अपने पापों में नहीं मरेंगे क्योंकि प्रभु ने, जो शांति है, शांति के राजकुमार को अपने क्रूस के लहू के द्वारा शांति दिलाने अर्थात मेल कराने के लिए भेज दिया। इसके अलावा, शांति के परमेश्वर के रूप में, याहवेह शलोम, प्रभु यीशु को मुर्दों में से निकाल लाया ताकि हम हर भले काम में उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सिद्ध हो सकें।

याहवेह त्सेबाओथ: ''सेनाओं का प्रभु''

याहवेह त्सेबाओथ अर्थात ''सेनाओं का प्रभु'' प्रकृति की असंख्य वस्तुओं, मनुष्यों की सेनाओं, और असंख्य स्वर्गदूतों के परमेश्वर के नियन्त्रण में होने की बात बताता है। इतनी बड़ी संख्या में परमेश्वर के अधिकार से असीमित शक्ति का इस्तेमाल करने के लिए तैयार लोगों का पता चलता है। यह वही तस्वीर है जिसका वर्णन दाऊद ने गोलियथ से कहकर किया था: ''तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है'' (1 शमूएल 17:45)। यही परमेश्वर सूर्य, चन्द्रमा, और तारों अर्थात ''आकाश के सारे तारागण'' (व्यवस्थाविवरण 4:19; भजन संहिता 33:6) पर शासन करता है। असंख्य स्वर्गदूत उसकी स्तुति और उपासना करते रहते हैं (उत्पत्ति 32:1, 2; भजन संहिता 103:20, 21; 148:2; प्रकाशितवाक्य 5:11)।

नये नियम में, *त्सेबाओथ* शब्द के पहले दो हवाले रोमियों 9:29 में मिलते हैं, जहां इसे ''सबाओथ'' के रूप में लिखा गया है। पौलुस ने यशायाह 1:9 से उद्धृत करते हुए ''सबाओथ का प्रभु'' की बात की, जो ''सेनाओं का प्रभु'' है। इस वाक्यांश में परमेश्वर को सेनाओं का अर्थात असीमित स्रोतों का प्रभु दिखाया गया है। संदर्भ के अनुसार, वह इस्राएल के बचे हुए लोगों को विनाश से निकालने में समर्थ था और अन्यजातियों के लोगों को अपने लोग बना सकता था। प्रभु को न कोई रोक सका था और न ही कोई रोक सकता है।

नये नियम में दूसरा हवाला याकूब 5:4 में है जो पुराने नियम का वाक्यांश *याहवेह त्सेबाओथ* है, फिर से इसका अर्थ ''सबाओथ का प्रभु'' है। वहां हम पढ़ते हैं कि सेनाओं का परमेश्वर, असंख्य स्रोतों का परमेश्वर देखेगा कि श्रम के अनुचित काम को सुधारा जाए।

याहवेह त्सिद्किनु: ''प्रभु हमारी धार्मिकता''

धार्मिकता के रूप में यीशु पर पूरी तरह निर्भर होने को तैयार व्यक्ति यिर्मयाह 23:6 में भविष्यवाणी के वचन *याहवेह त्सिद्किनु* अर्थात ''प्रभु हमारी धार्मिकता'' के अनुसार परमेश्वर की स्तुति करने को तैयार हो जाता है: ''उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम 'हमारी धार्मिकता' रखेगा''

(यिर्मयाह 23:6)। ऐसा करने के लिए, यह जानते हुए कि हमारी धार्मिकता केवल एक गन्दा कपड़ा ही है (यशायाह 64:6) हमें इस पर भरोसा करना छोड़ना पड़ेगा (देखिए तीतुस 3:5)। उद्धार पाए हुए व्यक्ति के लिए, यीशु ''परमेश्वर की ओर से ... ज्ञान ठहरा [है] अर्थात धर्म और पवित्रता और छुटकारा'' (1 कुरिन्थियों 1:30) ताकि महिमा करने वाला प्रभु में ही महिमा करे। यीशु हमारे पाप उठाने वाला बन गया अर्थात जब वह क्रूस पर था, तो परमेश्वर ने उसे पाप के रूप में देखा, चाहे वह पाप को जानता नहीं था, ताकि हम धर्मी ठहराए जाएं (2 कुरिन्थियों 5:21)। कलवरी पर ''दोष बलि'' (यशायाह 53:10) बनने के समय, परमेश्वर ने यीशु पर ''हम सभों के अधर्म का बोझ लाद दिया'' (यशायाह 53:6)। ''प्रभु हमारी धार्मिकता'' की यीशु के बारे में यिर्मयाह द्वारा की गई भविष्यवाणी पौलुस के यह अहसास करने पर कि मसीह की धार्मिकता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती पूर्णत: पूरी हुई थी:

> ... मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। और उस में पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है (फिलिप्पियों 3:8, 9)।

पाद टिप्पणियां

[1]मनुष्य के होंठों से ''याहवेह'' नाम का पहला उल्लेख हव्वा के मुख से मिलता है (उत्पत्ति 4:1)। सेथ के दिनों में इस शब्द का इस्तेमाल साधारण लोगों द्वारा किया जाता था (उत्पत्ति 4:26)। और जिन लोगों ने इस नाम का इस्तेमाल किया उनमें विशेष तौर पर अब्राम (उत्पत्ति 15:2), उसका सेवक (उत्पत्ति 24:12), लाबान और बतूएल (उत्पत्ति 24:50), अबीमेलेक (उत्पत्ति 26:28), याकूब (उत्पत्ति 28:16) और राहेल (उत्पत्ति 30:24) हैं।

मलक याहवेह: ''प्रभु का स्वर्गदूत''

उत्पत्ति 16:7 में परमेश्वर के लिए एक असामान्य हवाला *मलक याहवेह* अर्थात ''यहोवा के दूत'' मिलता है। स्पष्टत:, इसी दूत को *मलक एलोहीम* (न्यायियों 6:20, 21) भी कहा गया है।

परमेश्वर नहीं। कुछ लोग यहोवा के दूत को स्वयं परमेश्वर और यीशु के साथ मिलाते हैं। वास्तव में, इस दूत को ''एक परमेश्वर'' (उत्पत्ति 16:7, 13) कहा जाता है; परन्तु क्योंकि कुछ दूत परमेश्वर के दास हैं (प्रकाशितवाक्य 22:8, 9), परमेश्वर नहीं, इसलिए उसे दिया गया नाम परमेश्वर अवश्य ही किसी विशेष अर्थ में होगा। क्योंकि परमेश्वर ने स्वर्गदूत के लिए कहा कि, ''उसमें मेरा नाम रहता है'' (निर्गमन 23:20, 21) इसलिए मेल मिलाप के अर्थ में उसे परमेश्वर कहा जा सकता था क्योंकि वह परमेश्वर का निजी प्रतिनिधि था। परमेश्वर के निजी प्रतिनिधित्व के रूप में उसे देखने का अर्थ परमेश्वर को देखने के समान ही माना जाता था (उत्पत्ति 32:24, 30; होशे 12:4; न्यायियों 6:22, 23)। यह दूत बिना अहंकार के, ऐसे बात कर सकता था जैसे वह परमेश्वर हो (उत्पत्ति 16:10; 22:12)। परन्तु वह परमेश्वर केवल प्रतिनिधि के रूप में था; वास्तव में वह परमेश्वर नहीं था। परमेश्वर होने के बजाय वह परमेश्वर की सम्पत्ति, संदेशवाहक था, जिसने अपने आपको इस दावे के साथ यहोवा के दूत से अलग बताया कि वह स्वयं इस्राएल के साथ नहीं जाएगा, पर वह दूत अवश्य जाएगा (निर्गमन 33:2, 3; देखिए न्यायियों 2:1)। इसके अतिरिक्त यहोवा के दूत ने अपनी आराधना करवाने से इन्कार किया (न्यायियों 13:16), जो कि नहीं हो सकती थी यदि वह स्वयं परमेश्वर न हो, या वह देहधारण करने से पहले वाला यीशु न हो।

एक विशेष दूत। यहोवा का दूत, जो परमेश्वर नहीं था, अवश्य ही एक विशेष दूत होगा। वह विशेष इसलिए था क्योंकि उसमें परमेश्वर का नाम था और वह परमेश्वर का विशेष प्रतिनिधि था (निर्गमन 23:21)। वह जिब्राइल भी हो सकता है, जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा रहता है (लूका 1:19) और जिसे मरियम को यह समाचार देने का सम्मान मिला था कि वह यीशु की मां बनेगी। दूसरी ओर परमेश्वर का दूत मीकाइल भी हो सकता है, जिसे मुख्य और बड़ा प्रधान (दानिय्येल 10:13; 12:1), बल्कि प्रधान स्वर्गदूत (यहूदा 9) कहा जाता है। हो सकता है मसीह के आने के समय उसी का शब्द सुनाई दे (देखिए 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

परमेश्वर का रूप। ''यहोवा का दूत'' यह दिखाकर उसका वर्णन करता है कि परमेश्वर ने परमेश्वर के नाम से बोलने का अधिकार देकर एक निजी प्रतिनिधि को भेजा। इसलिए, परमेश्वर का यह वर्णन मनुष्य में परमेश्वर की व्यक्तिगत रुचि को दर्शाता है।